भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2022/30 दिनांक 20.06.2022

भारत की "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आईसीएआर-आईआई एसआर में दिनांक 20.06.2022 को "पोषण प्रबंधन हेतु सोयाबीन में संतुलित उर्वरक प्रबंधन" शीर्षक पर आयोजित कृषक संगोष्टी की प्रेस विज्ञप्ति

"आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की कड़ी में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा दिनांक 20 जून को **"पोषण प्रबंधन हेतु सोयाबीन में संतुलित उर्वरक प्रबंधन"** विषय पर ऑनलाइन कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. ज़ूम एप के साथ-साथ संस्थान के चैनल पर एक साथ प्रसारित इस कृषक संगोष्ठी में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान तथा हरियाणा राज्यों के कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विभाग के सम्बंधित वैज्ञानिक, अधिकारीयों एवं प्रगतिशील कृषकों समेत कुल 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी के प्रारंभ में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ बी.यु. दुपारे ने अपने संक्षिप्त स्वागत भाषण में सोयाबीन की फसल में पोषण प्रबंधन के महत्त्व को समझाते हुए कहाँ कि लगभग 50 वर्षों से सोयाबीन की खेती की जा रही है, लेकिन सोयाबीन के लिए आवश्यक पोषण पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जिसकी वजह से फसल प्रभावित होती है। इसके उपचार और आवश्यक पोषण को प्रदान करने के लिए किसानों द्वारा गोबर की खाद एवं रासायनिक उर्वरकों का उपयोग फसल के लिए अत्तयंत लाभदायक साबित होगा।

इस सत्र में संस्थान की कार्यवाहक निदेशक डॉ नीता खांडेकर द्वारा मुख्य रूप से पोषण प्रबंधन में संतुलित उर्वरकों पर ध्यान केन्द्रित किये जाने पर साथ ही सूक्ष्म पोषक तत्वों की महत्तवता के बारे में जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ एस.डी. बिल्लोरे ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि असंतुलित खाद के प्रयोग से बचना चाहिए क्यों कि असंतुलित मात्रा में प्रयोग किये गए उर्वरकों से पौधों द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषण में सही लाभ नहीं मिल पाता हैं। साथ ही उन्होंने यह भी बताया की किस प्रकार जब हम किसी एक ही तत्त्व का

सालों तक उपयोग करते हैं तो दूसरे तत्त्व का संतुलन बिगड़ने लगता है जिसके कारण उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने यह भी कहाँ कि आर्थिक क्षमता के अनुसार यदि उर्वरको का प्रयोग करना हों, तो किसी एक पोषक तत्व की कमी करने के स्थान पर फसल के लिए आवश्यक सभी प्रमुख तत्त्व जैसे नाइट्रोजन, फोस्फोरस, पोटाश एवं सल्फर की मात्रा में कमी की जानी चाहिए. उन्होंने यह भी बताया कि सोयाबीन फसल के लिए अनुशंसित प्रति हेक्टेयर 20:60:40:20 किग्रा. नाइट्रोजन, फोस्फोरस, पोटाश एवं सल्फर पूर्ति हेतु यूरिया 56 कि.ग्रा. + 375 कि.ग्रा. सुपर फॉस्फेट व 67 कि.ग्रा .म्यूरेट ऑफ़ पोटाश अथवा डी.ए.पी 125 कि.ग्रा.+ 67 कि.ग्रा .म्यूरेट ऑफ़ 25 किग्रा/ हे बेन्टोनेट सल्फर अथवा मिश्रित उर्वरक 12:32:16 @200 किग्रा + 25 किग्रा/ हे बेन्टोनेट सल्फर / 20:20:13 @300 किग्रा +25 किग्रा/ हे बेन्टोनेट सल्फर का प्रयोग किया जाना चाहिए.

इस अवसर पर किसानों द्वारा पूछे गए प्रश्नों एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया. सत्र के अंतिम चरण में डॉ सविता कोल्हे द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया साथ ही आगे भी इस तरह के जारुकता कार्यक्रमों को किसानों के लिए संचालित करने का आश्वासन दिया गया।

.....